दृष्टि The Vision

drishti

सामान्य अध्ययन

निर्धारित समय: 1 घंटा 30 मिनट
Time allowed: 1 Hour 30 Minutes

अधिकतम अंक: 125
Maximum Marks: 125

Name: PRINCE KUMAR

Mobile Number: ____________

Medium (English/Hindi): ____________

Email: ____________

Center & Date: ____________

UPSC Roll No.: ____________

प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों का उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहियें जिसका उल्लेख आपके प्रवेश-पत्र में किया गया है, और इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिये। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिखे गए उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेंगे।

प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।

उत्तर-पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

All the questions are compulsory.

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Answer Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Answer Booklet must be clearly struck off.

केवल मूल्यांकनकर्त्ता द्वारा भरा जाए *(To be filled by Evaluator only)*

Question Number	Marks
1.	
2.	
3.	
4.	
5.	
6.	
7.	
8.	
9.	
10.	
Grand Total (सकल योग)	

मूल्यांकनकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Evaluator (Signature)

पुनरीक्षणकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Reviewer (Signature)

drishti | दृष्टि The Vision

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

1. मैं जानता हूँ कि मैं बुद्धिमान हूँ, क्योंकि मैं जानता हूँ कि मैं कुछ नहीं जानता।

—— x —— x —— x ——
—— x —— x —— x ——

एक बार कुछ अंधे मित्र एक जंगल में गए, जहां उन्हे एक हाथी मिला। पहले मित्र ने हाथी के पैर को छुआ, तो उसे वह एक दीवार की भांति लगा। दूसरे मित्र ने उसके पैर को छुआ तो उसे वह एक विशाल स्तंभ प्रतीत हुआ। तीसरे ने उसके पूंछ को छुआ तो उसे वह एक रस्सी के समान मालूम पड़ा, वही जिसने सूंड को छुआ उसे वह एक विशाल अजगर प्रतीत हुआ।

उपर्युक्त कहानी ज्ञान की सापेक्षिकता को दर्शाता है। प्रत्येक व्यक्ति का अनुभव, उसकी चिंतन क्षमता, विचार

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

सीमित होता है, जो अनंत ज्ञान को समझने के लिए अपर्याप्त होता है। अतः ऐसे में किसी व्यक्ति को इस बात का ज्ञान हो जाना कि उसका ज्ञान सीमित है, उसे ज्ञानी बना देता है। इसी अर्थों में महान ग्रीक दार्शनिक सुकरात ने कहा था, कि - "मैं ज्ञानी इस अर्थ में हूँ कि मुझे अपनी अज्ञानता का ज्ञान है।"

वस्तुतः यह जगत अत्यंत विशाल है, जो अपने भीतर रहस्यों का एक विशाल सागर छुपाये हुए है। इस विशाल रहस्यों को मानव अपनी चेतना, तार्किकता, दर्शन आदि के द्वारा समझने का निरंतर प्रयास करता है। मानव निरंतर कुछ नए की खोज करता है, जो उसके भीतर के अज्ञानता को समाप्त कर ज्ञान का प्रकाश उत्पन्न करता है।

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

"रोशनी हुई
परछाई दिखी
अपने से बड़ा दिखा
अपना अंधकार।"

ध्यातव्य है, कि ज्ञान को प्राप्त करने के कई साधन है, जिसके प्रति विभिन्न चिंतकों के भिन्न विचार है। प्रत्ययवादी विचारक हिगेल के अनुसार भौतिक जगत मिथ्या है, जबकि विचारों का जगत ही सत्य है। हमारे विचार ही भौतिक जगत को निर्धारित करते है।

परंतु दूसरी ओर अनुभववादी विचारक ऐसा मानते है, कि हमारा ज्ञान हमारे अनुभव पर निर्भर करता है। विचार से परे भौतिक जगत का अपना स्वतंत्र अस्तित्व है। महान

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

2.

चिंतक जॉन लॉक के अनुसार आरंभ में हमारी आत्मा ज्ञान शून्य होती है। अनुभव से निरंतर आत्मा में प्रत्यय का ज्ञान होता है, और इन्ही प्रत्ययों से हमे वस्तु का ज्ञान प्राप्त होता है। वही कार्ल मार्क्स के अनुसार भौतिक परिस्थितियों के अनुसार ही विचारों का निर्धारण होता है।

अतः इससे यह दिखाई देता है, ज्ञान, जगत, जीवन को समझने के संदर्भ में विचारों की भिन्नता मौजूद है। ऐसे में व्यक्ति को यह समझना चाहिए, कि उसका ज्ञान ही अंतिम एवं निरपेक्ष नही है। जब व्यक्ति को अपनी इसी सीमितता को आभास होता है, तब वह निरंतर ज्ञान की प्राप्ति हेतु

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

अग्रसर होता है। इसी संदर्भ में अज्ञेय लिखते है :-

"अच्छे और बुरे के
संघर्ष से भी उन्नतर
अच्छे और उससे भी अच्छे
के बीच का संगर
गहन किंचित सफलता
अति मत्य असफलता
अतिरेक वादी पूर्णता
कि व्यथाएं बहुत भारी है।"

जब व्यक्ति इस बात को स्वीकार कर लेता है, कि वह भी अज्ञानता से परिपूर्ण है। तब व्यक्ति अपने जीवन में उसी अज्ञानता को दूर करने के लिए ज्ञान को ढूंढता है। उदाहरण के लिए राजकुमार सिद्धार्थ ने जब वृद्ध, रोगी, शव एवं साधु को देखा तो उन्हे जीवन एवं

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517

Copyright – Drishti The Vision Foundation

संशोधित

मायावी अज्ञानता का पहला आभास हुआ। इसी के बाद उन्होंने तमाम सुखों का त्याग करके 6 वर्षों की तपस्या के बाद निरंजना नदी के तट पर एक साधारण सी स्त्री के बातों को सुनकर निर्वाण प्राप्त किए और मध्यम मार्ग का खोज किया।

वस्तुत: जब हम अपनी ज्ञान प्राप्त करने की चेष्टा बनाए रखते है, तब हम इस भौतिकवादी जीवन से परे भी जीव जगत, आत्मा, ईश्वर जैसे रहस्यों को जानने का प्रयास करते है। ऐसा जरूरी नहीं है, कि चिंतन द्वारा हमे इन प्रश्नों का कोई ठोस उत्तर मिले ही, परंतु इस प्रक्रिया में हमारे अन्य उलझनों

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

3. का समाधान हो जाता है, जो व्यक्ति को शांत चित्त बनाता है। इसी संदर्भ में अस्तित्ववादी विचारक सोरेन किर्कगार्द ने कहा है:

"कुछ प्रश्न ऐसे होते है, जिनका उत्तर तथ्यों एवं तर्कों के आधार पर नहीं दिया जा सकता। ऐसे प्रश्नों पर व्यक्ति लंबे समय तक आत्मसंघर्ष की प्रक्रिया से गुजरता है, तथा अंत में उसके अनिश्चितता का संकल्प निश्चित संकल्प के रूप में विद्यमान होता है, और यही उस व्यक्ति के ठहराव की स्थिति होती है।"

परंतु वही दूसरी ओर जब व्यक्ति को अपनी अज्ञानता का ज्ञान नहीं होता है, तो उसकी स्थिति कुंए के मेंढक के समान

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

हो जाती है, जिसे कुँआ के भीतर ही पूरा संसार नजर आता है। यह स्थिति व्यक्ति के मानसिक विकास को अवरोधित कर देता है, क्योंकि जब हम यह मान लेते है कि हमे सब पता है, तो कुछ नया जानने, सोचने, सीखने की ईच्छा का ही अंत हो जाता है।

संपूर्ण मानव समाज पर भी इसी अज्ञानता का पर्दा है, जिसने आज विभिन्न समस्याओं को जन्म दिया है। उदाहरण के लिए मानव ने अपनी अज्ञानता के कारण ही अपने आर्थिक विकास के प्रक्रिया में पृथ्वी पर स्थित संसाधनों का अंधाधुन दोहन आरंभ कर दिया। उसने ~~~~ अपनी आत्मकेन्द्रित विचार

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

के कारण कभी भी पृथ्वी एवं उस उपस्थित अन्य जीवों की जरूरतों को नही समझा। तकनीक केन्द्रित इन्ही विचारों ने पृथ्वी पर जलवायु परिवर्तन, सिक्स मास एक्सिटंक्शन, संसाधन संकट जैसे चुनौतियों को उत्पन कर दिया है। इसी संदर्भ मे लियो टॉलस्टॉय ने कहा है, —

"खुशहाली की पहली शर्त है, कि मानव एवं प्रकृति के मध्य की कड़ी को नही तोड़ा जाए।"

आज समाज में भौतिकवादी एवं उपभोक्तावादी प्रवृति चरम पर है, जहां व्यक्ति आर्थिक विकास के अंधे प्रतिस्पर्धा में बिना सोचे-समझे दौर रहा है। इसके कारण नैतिक मूल्यों का पतन हो रहा है। सबसे बड़ी समस्या यह है, कि लोग अपनी

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

4.

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

असफलता को स्वीकार नही कर पा रहे है। उन्हे इस बात का आभास नही है, कि कोई भी व्यक्ति अपने जीवन में असफल हो सकता है। इसी अज्ञानता के कारण अवसाद, आत्महत्या ड्रग्स सेवन को बढ़वा मिल रहा है इन्ही समस्याओं पर मुक्तिबोध की पंक्ति प्रासंगिक लगती है :-

"कहने दो उन्हे जो यह कहते है,
सफल जीवन जीने में असमर्थ तुम।
तरक्की के गोल-गोल
घुमावदार-चक्करदार
उपर बढ़ते हुए जीने पर चढ़ने की
और चढ़ते ही जाने की,
उन्नति के बारे में
तुम्हारी ही जहरीली
उपेक्षा के कारण निरर्थक तुम व्यर्थ तुम।"

अतः हमे यह समझने की आवश्यकता है, कि एक मनुष्य के

Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

रूप में हमारे अनुभव, तर्कशीलता, चिंतन क्षमता सभी सीमित है। अतः हमे भीतर के अज्ञान की पहचान करनी होगी, एवं निरंतर अपने चेतना एवं तार्किकता की खिड़की को खुला रखना होगा, ताकि हमे ज्ञान रूपी प्रकाश की प्राप्ति होती रही। आज व्यक्ति को इस भौतिक सुखों की परिधि से बाहर निकलकर जीवन के अमूर्त पक्षों को भी समझने की आवश्यकता है। साथ ही हमारी चिंतनशीलता की परिधि केवल स्वकेन्द्रित एवं मानवकेन्द्रित नही होकर संपूर्ण जीव, जगत के हितों के अनुरूप होनी चाहिए।

"कुछ प्रश्न अपने आप में इतना महत्वपूर्ण होते है,
कि उन प्रश्नों तक पहुँचना ही उपलब्धि है।
उस प्रश्न का कोई उत्तर हो,
इसकी कोई अपेक्षा नही होती है।
वह प्रश्न स्वयं अनुत्तरित होते हुए भी
अन्य सभी प्रश्नों का उत्तर दे चुका होता है"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

परिवर्तन का रहस्य अपनी सारी ऊर्जा पुराने से लड़ने पर नहीं, बल्कि नए के निर्माण पर केन्द्रित करने से है।

——— × ——— × ——— × ———

द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान अगस्त 1945 में जापान के शहर हिरोशिमा एवं नागासाकी पर जब परमाणु हमला हुआ, तो उसने जापान को घुटने के बल खड़ा कर दिया। इस युद्ध के परिणाम से जापान बिल्कुल जर्जर हो गया था। परंतु इसके बाद जापान ने अपना पूरा संसाधन युवाओं के कौशल विकास एवं मानव विकास पर लगाया। उसने पुनः सैन्यीकरण करके अपने अपमान के बदला लेने की सोच को खारिज कर दिया। इसी कारण से आने वाले कुछ ही दशकों मे जापान

Copyright – Drishti The Vision Foundation

5.

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

आर्थिक एवं तकनीकी विकास के स्तर पर पश्चिमी देशों के समकक्ष आ खड़ा हुआ।

यह हमें दिखाता है, कि यदि हम पुराने से लड़ने के बजाए नए के सृजन पर ध्यान केन्द्रित करे, तो उसके परिणाम अधिक लाभकारी वह स्थायी होंगे। इसी संदर्भ में फैज अहमद की शायरी याद आती है:

दिल नाउम्मीद तो नहीं नाकाम ही तो है
लंबी है, गम की शाम, मगर शाम ही तो है।

वस्तुतः जब कोई व्यक्ति, संगठन, राष्ट्र आदि अपने इतिहास की घटनाओं को वर्तमान से संबद्ध करके उससे ही लड़ने में लगे रहते है, तब वे अक्सर अनावश्यक कार्यों में अपनी ऊर्जा व्यर्थ करते

Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

रहते हैं। इसके कारण उसका वर्तमान एवं भविष्य दोनों ही नकारात्मक रूप से प्रभावित होता है। उदाहरण के लिए रूस एवं यूक्रेन के मध्य हो रहे वर्तमान युद्ध का कारण भी इतिहास में छिपे हुए। वस्तुतः इस युद्ध के बीज USSR के विघटन, शीत युद्ध एवं नाटो के विस्तारवादी नीतियों में छिपा हुआ है।

इसी तरह जब कोई व्यक्ति अपनी ऊर्जा पुराने समस्यों से लड़ने में लगाता है, तो वह नए सोच, नवाचार, प्रगतिशीलता का ही गला घोंटता है। वस्तुतः जब तक हमारे मानस पटल पर अतीत एक स्थायी आयाम के रूप में मौजूद होगा, वह हमारे वर्तमान के निर्णयों को उसके अनुरूप ही नियंत्रित करेगा।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

इसके कारण हम चीजें को एक नए दृष्टिकोण से नहीं देख पाते हैं, जो हमें भविष्योन्मुखी होने से रोकता है। उदाहरण के लिए यदि किसी छात्र पर पूर्व परीक्षा की असफलता का डर हावी हो जाए, तो भविष्य के परीक्षा पर भी उसका नकारात्मक परिणाम होता है।

यही वजह है, व्यक्ति को अपने जीवन में परिवर्तन के लिए पुराने से लड़ने के बजाए उसकी गलतियों से सीखना चाहिए एवं नए के निर्माण का प्रयास करना चाहिए। उदाहरण के लिए अब्राहम लिंकन ने अपने जीवन में बहुत छोटे स्तर के चुनावों में निरंतर पराजय को देखा, परंतु वे सतत रूप से आगे बढ़ते रहे और अंततः अमेरिका के इतिहास में महान राष्ट्रपति के रूप में अमर हो गए। इन्ही संदर्भों

Copyright – Drishti The Vision Foundation

6.

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

में मैथिली शरण गुप्त कहते है,

"नर हो न निराश करो मन को
कुछ काम करो कुछ काम करो
जग में रहकर कुछ नाम करो।"

वस्तुतः जब व्यक्ति अपनी ऊर्जा नये के निर्माण में लगाता है, तब नए विचार व नए आत्मविश्वास से युक्त होता है। उसके भीतर पुनः सफलता की बीज का अंकुरण होता है। उदाहरण के लिए स्वतंत्रता आंदोलन मे गांधी ने असहयोग आंदोलन के दौरान कहा था, कि एक वर्ष में स्वतंत्रता मिलेगी जो सम्भव नही हुआ परंतु बिना निराश हुए वे निरंतर, नए जोश के साथ जनता को जागरूक करते रहे एवं सविनय अवज्ञा, व्यक्तिगत सत्याग्रह एवं भारत छोड़ो आंदोलन का सूत्रपात किया। अंततः भारतीय राष्ट्रवाद के आगे ब्रिटिश साम्राज्यवाद

Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

ने घुटने टेक दिए, और स्वतंत्र भारत का निर्माण हुआ।

"चलो अभिष्ट मार्ग में सहर्ष खेलते हुए।
विपत्ति विघ्न जो मिले उसे ढकेलते हुए।।"

यदि हम अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में देखे तो संयुक्त राष्ट्र का निर्माण भी कुछ नए के निर्माण करने की सोच का परिणाम है। वस्तुतः द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद पुराने इतिहास में उलझकर तीसरा विश्वयुद्ध ना हो जाए उसे रोकने के लिए एवं शांतिपूर्ण सहअस्तित्व को बढावा देने के लिए दुनिया भर के राष्ट्रों ने संयुक्त राष्ट्र का निर्माण किया था। आज भले ही यह रूस-युक्रेन युद्ध को नही रोक पाया है, परंतु पिछले 75 वर्षों में विभिन्न शक्तियों के बीच तीसरे युद्ध होने से जरूर रोका है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

इसी तरह भारत एवं पाकिस्तान के बीच की कहानी भी पुराने से संघर्ष व नवीन निर्माण के द्वंद को दर्शाता है। वस्तुतः विभाजन के कठोर दंश को झेलने के बाद स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में भारत ने आर्थिक-सामाजिक एवं तकनीकी विकास पर बल दिया। इसी का परिणाम है, कि हम आज विश्व की पांचवी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था, सबसे बड़ा लोकतंत्र एवं अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में उभरते महाशक्ति के रूप में जाने जाते है।

वही इसके विपरीत पाकिस्तान ने अपनी ऊर्जा पुराने से लड़ने पर लगाया, जिसके कारण उसकी आंतरिक व विदेश नीति केवल भारत के विरोध तक सीमित हो गई। उसने स्वयं की प्रगति के बजाए भारत को नुकसान पहुँचाने में अपनी ऊर्जा व

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

7.

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

संसाधन को बर्बाद किया। यही कारण है, कि आज वहा की आर्थिक विकास चरमरा गई है, घरेलू राजनीति में अशांति एवं विश्वपटल पर अलग-थलग हो चुका है।

अगर हम वर्तमान में पर्यावरणीय संकट को देखे तो जलवायु परिवर्तन, वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, ओजोन क्षरण जैसे कई समस्याएं मौजूद है। इन समस्याओं की उत्पति में अधिकांश भूमिका विकसित राष्ट्रों की रही है। परंतु इसका समाधान के लिए सभी राष्ट्रों को सामूहिक प्रयास की आवश्यकता थी। इसी कारण से ~~विकासशील~~ दुनिया के राष्ट्रों ने नवीन दृष्टिकोण को अपनाते हुए Common But Differentiated Responsibility (CBDR) के सिद्धांत को अपनाया। ~~~~ इसी सिद्धांत पर क्योटो प्रोटोकॉल, पेरिस समझौता, मॉन्ट्रियल

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

प्रोटोकॉल आधारित है। यह दिखाता है, कि हमे सदैव नए निर्माण पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए, न कि पुरानी बातों से लड़ने में समय की बर्बादी करनी चाहिए।

"मानव सभ्यता का भविष्य या तो हरा होगा, या होगा ही नहीं।"
(बॉब ब्राउन)

कुछ ऐसी ही स्थिति भारत में संविधान निर्माण में दिखाई देती है। हमारे संविधान निर्माताओं ने इतिहास में हुए घटनाओं से ऊपर उठकर नए समतामूलक राष्ट्र के निर्माण का लक्ष्य रखा। इसीलिए इतिहास में हुए विभिन्न धर्मों के टकराव को भुलाकर सभी को धार्मिक समानता का अधिकार दिया गया। साथ ही शोषणमूलक वर्णव्यवस्था का अंत करते हुए वंचित वर्गों के लिए विशेष प्रावधान किया।

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

अतः हमे यह समझना चाहिए कि जीवन में कुछ भी स्थायी नहीं होता है। परिवर्तन प्रकृति का एक शाश्वत नियम है। गौतम बुद्ध ने भी कहा है:- "Nothing is permanent Except change."। इसी परिवर्तन को परिणाम को अपने पक्ष में करने हेतु हमे पुराने घटनाओं से सीखकर नए ऊर्जा, नए विचारों से युक्त होकर निरंतर नए के सृजन की ओर बढ़ते रहना चाहिए। यही निरंतरता व नवीनता व्यक्ति एवं समाज के लिए सुखद परिणाम लाएगा।

"अन्त में मित्रो, बस इतना कहूँगा
अन्त केवल एक मुहावरा है
जिसे शब्द हमेशा
अपने विस्फोट से उड़ा देते है
और बच्चा रहता है, हर बार
वही एक कच्चा सा
आदिम मिट्टी जैसा ताजा आरंभ
जहां से सब कुछ फिर से शुरू हो सकता है।"

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation